द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के बालगीतों में प्रकृति चित्रण

वेदकला, शोधार्थी

डॉ. मधुबाला शर्मा, शोध निर्देषक

हिंदी विभाग,सनराईज विष्वविद्यालय

अलवर (राज0)

बाल मन कौतूहल पूर्ण जब सूरज को देखता है, चाँद और तारों को देखता है, तो वाह! वाह! कह उठता है। वह जब चिडियों को उड़ती देखता है, तो विस्मय से भर उठता है, सोचने लगता है - काश उसके भी पंख होते। काश ! वह भी उड़ सकता - तो कितना अच्छा होता - फूल, तितलियाँ, टहनियाँ, टोंटी से टपकता पानी, सब के साथ जीना चाहता है। गुब्बारों का रंग बिरंगा जमघट, उसे लुभाता है। बाल साहित्यकार निरकंर दवे सेवक कहते हैं कि - "बच्चा क्या होता ह, इसे समझे बिना उसके स्वभाव को भी ठीक-ठाक नहीं समझा जा सकता। प्रत्येक बच्चा अपने जन्म से ही अपने आज में संपूर्ण एक स्वतंत्र मनुष्य होता है। देखने में वह कितना ही निर्बल, निस्सहाय और क्षमता रहित मालूम हो, पर उसमें वह शक्तियाँ विद्यमान रहती हैं, जो किसी भी पूर्ण विकसित मनुष्य में हो सकती हैं। माता-पिता का यह अभिमान कि उन्हांने उसे बनाया ह, एक ऐसा भ्रम है, जिससे बडा़ दूसरा और कोई भ्रम नहीं हो सकता। वह तो उसके निर्माण में उस संपूर्ण सृष्टि के द्वारा माध्यम के रूप में प्रयोग कर लिए जाते हैं, जिसका एक अंग होते हु एभी वह अपने आप में पूर्ण होता है।

बच्चों के प्रिय चाचा नेहरू ने एक स्थान पर लिखा है कि - "संसार भर मं बच्चां की एक बडी़ सेना है, जो बाह्य रूप से बोलियां, कपड़ों आदि में कई तरह से एक दूसरे से भिन्न है, किंतु फिर भी वे सब एक से हैं..........वे आपस में वर्ग, जाति, धर्म स्तर का भेदभाव नहीं मानते।" वे अपने माता-पिता से भी अधिक बुद्धिमान होते हैं, पर जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं, दुर्भाग्यवश उनका प्राकृतिक रूप बड़ों की शिक्षा और व्यवहार से ढ़क दिया जाता है।

" संगीताचार्यांे के गुरू स्वामी हरिदास से एक बार किसी ने पूछा था - "संगत मं सबसे अधिक आनंद किसे आता है? तो उन्होंने उत्तर दिया था - "बच्चों को?" तब क्या उसका यह तात्पर्य है कि बच्चे राग-रागनियों में स्वरों के उतार-चढ़ाव, गति, लय, स्थायी अंतरा आदि से परिचित होते हैं? संगीत की तरह कविता के कालायक्ष के विषय में भी कोई पूर्ण ज्ञान बच्चों को नहीं होता फिर भी वह उसमें रस लेते हैं।

इसी रस का उदीयन द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविताआं ने बच्चां को कराया है। "द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हिंदी बाल साहित्य के एक अमिट हस्ताक्षर हैं। उनकी रचनात्मक सहजता पाठक को कई दृष्टियों से अपनी ओर आकृष्ट करती है। उनका सीधा-सरल कवितत्व और विपुल साहित्य सृजन जीवन के लंबे दौर और साहित्यिक परिवेश मंे उनकी सृजनधर्मिता का परिचालक है। उनका लेखन शास्वत मूल्यां का पक्षधर रहा है। उन्हांने जो कुछ लिखा, जिदंगी से जुडकर लिखा। पारिवारिक दायित्वां, साहित्यिक रूचियां और सरकारी

 Copyright © 2020Authors

पदों की गरिमा का निर्वाह उन्होंने जिस सहजता से किया, वह अनुकरणीय है। उनकी रचनाओं में उनकी पहचान बोलती है।

” बाल कविता के क्षेत्र में माहेश्वरी को लाने का श्रेय उनके गुरू एवं वंशीधर श्रीवास्तव को जाता है। माहेश्वरी जी उन दिनों (1943 से) इलाहाबाद में राजकीय बेसिक टेªनिंग कॉलेज में शिक्षक थे। उसी कॉलेज में श्री वंशीधर श्रीवास्तव भी थे। हिंदी व अंग्रेजी पर उनका समान अधिकार था। वे लखनऊ के नवल किशोर प्रेस के लिए मिडिल कक्षाओं के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तकें तैयार कर रहे थे। श्रीवास्तव जी ने माहेश्वरी जी से कहा कि - ”कक्षा 5 के लिए कोई उपयुक्त प्रार्थना गीत नहीं मिल रहा है, तुम लिख दो।”

माहेश्वरी जी यह सुनकर असमंजस में पड़ गए। उन्होंने कहा कि मैंने तो बच्चों के लिए अभी तक कुछ भी नहीं लिखा है, फिर भी प्रणाम करता हँू। गुरू आज्ञा के अनुपालन में उन्होंने एक प्रार्थना गीत तैयार कर श्रीवास्तव जी को सौंप दिया। श्रीवास्तव जी ने कविता की बडी़ सराहना की तथा पांचवंे दर्जे की पाठ्यपुस्तकांे मंे पहली कविता के रूप मंे प्रार्थना गीत देने का प्रचलन था। कविता की प्रारंभिक पंक्तियाँ थीं -

” हे दीनबंधु करूणा निधान

जगती-तल के चिर सत्य प्राण।

हो रही व्याप्त हैं कण कण में

तेरी ज्योर्तिलीला महान।”

माहेश्वरी जी की कविताओं में एक गहरी आत्मोन्मुखता है। प्रकृति और मानव को उन्होंने अत्यंत तादाम्यभाव से ग्रहण किया है। कविता कवि के मन से फूटती है। कवि के भीतर की अनुभूतिही कहीं कविता की शक्ल ग्रहण करती है। वास्तव में कवि अपनी कविता के माध्यम से स्वागत निवेदन करता है। वह कविताओं में खुलता है।”

प्रकृति चित्रण मंे कवि की भाव व्यंजना अद्भूत है। बच्चों को प्रकृति के प्रेम में डूबो देने की अद्भूत क्षमता कवि मंे है। वे प्रकृति के उपादानों से बच्चों को संदेश देना चाहते हैं। वे नैतिक और त्यागपूर्ण आचरण को रेखांकित करते हैं। अपनी एक कविता ‘वर्षा में कवि कहता है कि - वर्षा इस मर्त्यलोक में जीवन संदेशा लेकर आती है। ये वर्षा सदैव परहित के लिए तैयार रहती है। यह नीरव और शुष्क जगत को रसमय बना देती है। वर्षा के आने से निर्जीव जगत सुंदर नव जीवन पाता है -

नभ के नीले आँगन में

घनघोर घटा घिर आयी।

इस मर्त्य लोक को देने

 Copyright ⓒ 2020Authors

जीवन संदेशा लायी।1।

है परहित-निरत सदा ये

मेघों की माल सजीली।

इस नीरव शुष्क जगत को

करती है सरस रसीली।2।

इससे निर्जीव जगत जब

सुंदर नव जीवन पाता।

हरियाली मिस अपना वह

हर्षोल्लास दिखलाता।3।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने प्राकृतिक कविताओं के माध्यम से बालकों को संस्कार प्रदान करने की कोशिश की है। वे जानते हैं कि बालक जो कुछ देख रहा है, सुन व समझ रहा है, वह सब वह आत्मसात कर रहा है, उस संबंध में बाल मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि - ”बच्चों के लिए कविता में रस का आधार भौतिक है और वह उनके भौतिक अस्तित्व से ही संबंध रखता है। बच्चा उस सृष्टि का नया अलग अस्तित्व में आया एक अंग होता है, जिसे ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीनकाल के लोग अचरज की दृष्टि से देखते थे।”

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने प्रकृति के रसांे से कविता के रस को जोड़ा है। अपनी बाल कविता ‘सरिता मंे वे कहते हैं कि ”सरिता निरंतर गतिमान रहती है, वे उससे उसका कारण पूछते हैं तथा वह विश्राम क्यों नहीं करती। वे बच्चों को सहज ही बता देते हैं कि सरिता का उद्गम स्थान हिमालय है और वह सागर में जाकर मिलेगी। -

सरिते ! क्यों अविरल गति से

प्रतिपल बहती रहती हो ?

क्षणभर के लिए कहीं भी

विश्राम क्यों न करती हो ?

क्या कोई शुभ संदेशा

लायी हो तुम हिमगिरि से?

कहने जाती हो जिसको

 Copyright © 2020Authors

अपने प्रेमी सागर से।

बाल कविताओं के लिए बाल मनोविज्ञान को जानना बहुतआवश्यक होता है। कवि को स्वयं के लिए उसी स्वर पर ले जाना पड़ता है। बाल साहित्यकार निरंकार देव सेवक कहते हैं कि - ”बचपन में मनुष्य में तर्क या विवेक बुद्धि का प्रायः अभाव रहता है। वह ऐसी वस्तुओं को पाने की चेष्टा करता है, जिन्हें पाना बड़ों की दृष्टि में सर्वथा हास्यास्पद हो सकता है। प्राप्त करने के प्रयासों मंे असफलता हाथ लगने पर बालक स्वयं अपने ऊपर ही क्रोध करने लगता है। सुंदर, सुरूचिपूर्ण बालगीत या दूसरा कल्पना या भावना प्रधान साहित्य बच्चांे के हृदय की वृत्तियों का परिष्कार करके उनके मन को समय आरै परिस्थितियों के अनुसार ऐसी दिशाओं में लगा सकता है जिससे उसके मन में पराजय का भाव न आ सके।” द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने उसी पराजय या क्रोध अथवा निराशा के भाव को बालक के मन से दूर करने के लिए सदैव सकारात्मक बाल कविताआंे का सृजन किया है। उनका प्रकृति चित्रण भी मनमोहक है। यहाँ हम उनकी कविता ‘तारे’ की कुछ पंक्तियाँ दे रहे हैं, जिनमें आकाश जगत की सुंदरता का मनोहारी वर्णन है -

करते रहते क्यों झिल मिल

नभ में ये सुंदर तारे ?

खेला करते क्या हिलमिल

ये आँख-मिचौली सारे।।

क्या विश्व वृक्ष की डाली

पर हँसती कोमल कलियाँ ?

क्या फैलादी उस माली

ने सुंदर सुमनावलियाँ।

क्या नील गगन सागर में

मोती बिखरे हैं आली ?

या संध्या की सागर में

ये मणियाँ भरी निराली।।

बाल साहित्यकार निरंकार देव सेवक कहते हैं कि - ”छोटे बच्चों के मन स्वभावतया बहुतचंचल होते हैं। मन की चंचलता के कारण वह किसी वस्तु का एक निश्चित रूप अपने मन में स्थिर नहीं कर पाते। घोड़े में संूड वाले हाथी और पंख लगी उड़ने वाली छिपकलियों की विचित्र कल्पनाएँ वह प्रायः किया करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य इस चंचलता को वश में करके उन्हें संसार की वस्तुओं को, वे जैसी हैं, वैसी ही देखने के लिए दृष्टि और

Copyright ⓒ 2020Authors

 ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 07 July 2020

साथ-साथ नित नई कल्पनाएँ करने की शक्ति प्रदान करता है।" द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने 'सागर' कविता में लिखा है कि सागर का हृदय कितना विशाल है, इसी कारण वह अपने अंदर सुंदर मोतियों को भर लेता है -

सागर ! कितना विशाल डर

लेकर जग में आये हो !

उसमें भी कितने सुंदर

मोती भरकर लाए हो।

विशाल हृदय पक्ष का प्रकटीकरण सागर द्वारा होता है। उसके भाव स्वच्छ और निर्मल है। सागर अपनी विशालता प्रतिपल बढ़ाता रहता है। कवि कहता है कि अरे सागर तुम्हारी विशालता को देखकर हमें आश्चर्य होता है। मैंने जग में अभी तक तुम्हारी विशालता जैसा हृदय वाला नहीं देखा।

ये मोती ही इस डर के

हैं भाव स्वच्छ औं, निर्मल!

वद्धित करते रहते हैं

उसकी विशालता प्रतिपल।

लखकर विशालता यह प्रिय

आश्चर्य हमें होता है।

जग में न अभी तक तुम सा

डर का विशाल देखा है।

कवि सागर को सहनशील बताता है। वह कहता है कि ग्रंथों में भी सागर जैसा सहनशील दूसरे का वर्णन नहीं मिलता है। 'सागर' के संबंध मंे कवि ने विराट संकल्पना प्रस्तुत की है। कवि बच्चांे की कल्पनाशक्ति का विकास करना चाहता है। बाल साहित्यकार निरंकार देव सेवक कहते हैं कि "बाल गीतों की शिक्षा का दूसरा उद्देश्य उनकी कल्पना शक्ति को विकसित करना होता है। विकसित कल्पना शक्ति के बिना कोई मनुष्य जीवन के किसी क्षेत्र में कोई उन्नति नहीं कर सकता। प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान या आविष्कार करने से पूर्व ही अपने भावी रूपों और परिणामांे की पूर्ण कल्पना कर लेता है। जो व्यक्ति कल्पना द्वारा नई-नई परिस्थितियों और किसी कार्य के परिणामों की जितनी यथार्थ कल्पना पहले से कर सकता है, वह उतना ही अपने जीवन में सफल होता है। अंग्रेजी के एक प्रसिद्ध कवि शैली ने एक स्थान पर कहा है - । उंद जव इम हतमंजसल हववक उनेज पउंहपदम पदजमदेमसलण्

 Copyright © 2020Authors

ISSN 2454-2695
Vol 6 Issue 07 July 2020

कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कल्पनाशक्ति बहुत प्रखर थी - तथा प्रकृति से उनकी निकटता भी थी। उन्होंने प्रकृति के विभिन्न उपादानों का बहुत ही यथार्थ एवं सुंदर चित्रण किया है। उन्होंने एक बसंत गीत लिखा है - जो अत्यधिक मनमोहक है-

मा! यह बसंत ऋतुराज ही।

आया लेकर नव साज ही।

यह-यह-यह डाली महक रही

कुछ -कुछ-कुछ कोकिल कुहु करही

संदेश मधुर जगती को वह,

देती बसंत का आज री।

गुन-गुन-गुन भौरे गूँज रहे,

सुमनों सुमनों पर झूम रहे

अपने मधु गुंजन से कहते

छाया बसंत का साज री।

द्वारिका प्रसाद माहश्ेवरी ने अपनी कविता 'कुसुम' मंे प्रकृति के माननीय स्वरूप को प्रस्तुत किया है। वे भारत के त्यागी-तपस्वी ऋर्षि परंपरा का भी उल्लेख करते हैं। वे पुष्प के स्वभाव को उन्हीं ऋर्षि परंपरा का हिस्सा मानते हैं।

हँस रहे हो क्यों कोमल फूल ?

बता दो काँटों पर तुम झूल

मग्न हो क्यों तुम सुधि बुधि भूल ?

चुभोते क्या त्रिशूल नटि शूल ?

सुना है भारत के प्राचीन

तपस्वी आराधना में लीन

किया करते थे निज तन क्षीण

बिछाकर सजे कंटका कीर्ण।।

Copyright © 2020Authors

’ वृक्ष ‘ (शुष्क वृक्ष) नामक कविता के माध्यम से द्वारिका प्रसाद माहश्ेवरी ने भारत के संपूर्ण प्राचीन सामाजिक दर्शन का परिचय कराया है। वे शुष्क वृक्ष से कहते हैं कि तुम मौन क्यांे खड़े रहते हो, क्या तुमने अपने शरीर की वस्यादि सभी वस्तुएँ त्याग दी हैं, तुम्हारी सभी डालियाँ निरक्त हो गई हैं। क्या आपकी वानप्रस्थ सीमा समाप्त हु ईहै और तुम जीवन की अंतिम यात्रा सन्यास की ओर प्रस्थान कर रहे हो, मुझे तो लगता है तुमने सन्यास ग्रहण कर लिया है और तुम कठिन तपस्या में खड़े हो, कितने कष्ट सह रहे हो-

किस लिए वृक्ष ! बतला दो

तुम मौन बने रहते हो ?

क्यों अचल बने जीवन भर

बस यहीं खड़े रहते हो ?

क्यों सखे तुम्हाने तन ने

वस्तुएँ सकल तल दी हैं ?

जो रक्त डालियाँ थीं कल

वे आज विरक्त बनी हैं ?।।

क्या वानप्रस्थ आश्रम की

सीमा का अंत हु आहै ?

जिससे जीवन ने अंतिम

आश्रम सन्यास लिया है ?।।

सन्यास ग्रहण कर ही क्या

तप कठिन कर रहे हो तुम ?

स्थिर होकर खड़े क्यों हो

सब कष्ट सह रहे हो तुम ?।।

इसी प्रकार कवि ने धरती पर अद्भत् छटा बिखरने वाली यमुना का सुंदर चित्रण किया है। उन्होंने इस कविता में भी भारतीय पौराणिक चिंतन को प्रकट किया है। जिसमें यम और यमदूतों की भी चर्चा की है-

यमुने ! तू लेकर तेज धार

क्यों बहती रहती है अविरल ?

Copyright ⓒ 2020Authors

क्यों उपकूलों से टकराकर

तेरा जल हँसता है कल कल ?।।

क्या ! तेरी ही इस तेज धार

से यम-दूतों को हु ईमास ?

जिससे कल-कल जल हँसता

प्रकटित करता विजयोल्लास।।

अपनी कविता - ”है कहाँ अरे! वह कलाकार’ में कवि ने विश्व के सर्वश्रेष्ठ कलाकार ईश्वर के चमत्कारों की चर्चा की है। उन्होंने कहा है कि वह अनु पम है अपूर्व है। -

है कहाँ अरे! वह कलाकार!

अनु पम, अपूर्व वह कलाकार!

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविता ‘वीणा’ में भी उन्होंने वीणा का मानवीकरण किया है तथा उससे उसके गु णांे का प्रश्नों के माध्यम से विस्तार किया है। ठीक उसी प्रकार उनकी कविता गिरिवर (हिमालय) का भी मानवीकरण किया है, उसके पत्थर होने का अहसास भी कराया है।

गिरिवर! स्वरूप पत्थर का

धारण कर क्यों आए हो ?

क्या इस स्वरूप में भी कुछ

जग को देने लाए हो ?

इस प्रकार द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी के बाल-गीतों में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है तथा उन्होंने प्रकृति को भारत की सांस्कृतिक विरासत के साथ भी जोड़कर बच्चों को सहज ही उससे परिचित करा दिया है। भारत की अद्भूत संस्कृति का प्रकृति के साथ समायोजन बहु तही सुंदर बन पड़ा है। उन्होंने स्वयं ही कहा है कि -

” अपने को सभ्य समझने वाला आज का मानव प्रकृति के विस्तृत तथा मनोरम प्रांगण में अवतीर्ण होकर, हाथ में स्नेहसिक्त - ‘दीपक’ लिए, अपनी और प्रकृति की जड़ कहे जाने वाले पदार्थों की वास्तविक स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश डाल सकता है, ऐसी मेरी धारणा है। ‘दीपक’ को निर्मल ज्योति में सबकी अपनी दुःखद कृत्रिमता और प्रकृति की सु खद स्वाभाविकता स्पष्ट दिख जाएगी।

” अतः यह बात उचित ही है कि मानव समाज को जो प्राकृतिक संपदा मिली है, उसी में उसकी भी जड़ें निहित हैं, उसको यदि उसने हानि पहु ँचाई तो उसके अस्तित्व को भी चुनौति मिलेगी।

 Copyright © 2020Authors

संदर्भ:-

1. निरंकार देव सेवक: बालगीत साहित्य - पृष्ठ 1

2. निरंकार देव सेवक: बालगीत साहित्य - पृष्ठ 19

3. डॉ. ओम निश्चल एवं डॉ. विनोद माहेश्वरी - द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी रचनावली - प्रवर्तन

4. निरंकार देव सेवक: बालगीत साहित्य: पृष्ठ 20

5. 'सरिता' द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचनावली - पृष्ठ 7

6. निरंकार देव सेवक: बालगीत साहित्य - पृष्ठ 368

7. 'तारे' द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचनावली - पृष्ठ 19

8. निरंकार देव सेवक: बाल गीत साहित्य - पृष्ठ 369

9. सागर - द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचनावली - पृष्ठ 19

10. निरंकार देव सेवक: बालगीत साहित्य - पृष्ठ 372

11. बसंत गीत: द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचनावली - पृष्ठ 18-19

12. वही पृष्ठ 32

13. शुष्क वृक्ष: वही पृष्ठ 35

14. यमुना - वही - पृष्ठ 39

15. है कहाँ अरे! वह कलाकार - पृष्ठ 41

16. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी रचनावली - 'अपनी ओर से' ।

 Copyright ⓒ 2020Authors